# लोगोस बाइबल प्रतियोगिता मॉड्यूल: 6

[लोगोस बाइबल अध्ययन सेवकाई]

वेबसाइट: https://logosinhindi.com/
ईमेल: logosinhindi@gmail.com

# विषय- सूची

Chapter 1: कैल्विनवाद, आर्मिनवाद और परमेश्वर कि तीन इच्छाएं

Chapter 2: नया जीवन और बपतिस्मा

Chapter 3: प्रश्न : “तौभी बच्चे जनने के द्वारा उद्धार पाएंगी, यदि वे संयम सहित विश्वास, प्रेम, और पवित्रता में स्थिर रहें॥” ( 1 तीमुथियुस 2:15) इस आयत का मतलब क्या है? क्या स्त्रियां वास्तव मे बच्चा जनने के द्वारा उद्धार पाएंगी?

Chapter 4: इफिसियों 1:3-12 पर मनन करें और याद करने का प्रयास करें

Chapter 5: यहुन्ना 10 की निम्न आयतों पर मनन करें और याद करने का प्रयास करें: 14-16; 25-29

Chapter 6: यहुन्ना 17 की निम्न आयतों पर मनन करें और याद करने का प्रयास करें: 6-10; 20-21

## Chapter 1: कैल्विनवाद, आर्मिनवाद और परमेश्वर कि तीन इच्छाएं

*आहा! परमेश्वर का धन और बुद्धि और ज्ञान क्या ही गंभीर है! उसके विचार कैसे अथाह, और उसके मार्ग कैसे अगम हैं!*

*प्रभु कि बुद्धि को किस ने जाना या उसका मंत्री कौन हुआ?*

*या किस ने पहिले उसे कुछ दिया है जिस का बदला उसे दिया जाए।*

*क्योंकि उस की ओर से, और उसी के द्वारा, और उसी के लिये सब कुछ है: उस की महिमा युगानुयुग होती रहे: आमीन. (रोमियों 11:33-36)*

उपर्युक्त आयतों में हम निम्न मोटे-मोटे बिंदु पाते हैं:

**1.** परमेश्वर का धन, बुद्धि और ज्ञान अत्यंत गंभीर है. सच में वो अपार रूप से गंभीर हैं.

**2**. उसके विचार अथाह हैं.

**3.** उसके मार्ग अगम हैं अर्थात उसके काम करने के तरीके हमारी समझ में कभी पूरी तरह नहीं आ सकते.

**4.** उसकी बुद्धि अनंत है और उसको कोई पूरी तरह नहीं जान सकता.

**5**. हम सीमित बुद्धि वाले मनुष्यों को उसको कैसा होना चाहिए या कैसे काम करना चाहिए ये सलाह देने कि कोशिश नहीं करनी चाहिए.

**6**. इस ब्रहम्माण्ड में सब कुछ उसी कि ओर से, उसी के द्वारा ओर उसी के लिए हो रहा है.

**7**. और जो कुछ भी अच्छा ओर बुरा इस दुनिया में हो रहा है वो सब अंततः उसी कि महिमा के लिए हो रहा है.

उपर्युक्त आयतों के मतलब को समझ कर या उन पर मनन करके हम रोमांचित और अभिभूत हो जातें हैं, क्योंकि हम देखते हैं कि परमेश्वर का चरित्र, उसकी बुद्धि, उसके काम करने के तरीके: ये सब महान है. परमेश्वर तो अथाह है; उसकी थाह नहीं पाई जा सकती. हमें बाइबल में कुछ चीज़ें दी हुई है जिनको मनुष्य का सीमित दिमाग कभी पूरी तरह नहीं समझ सकता। इन चीज़ों को हम विश्वास से ग्रहण करते हैं. हम कहते हैं की मेरे समझ में नहीं आ रहा कि ऐसा कैसे हो सकता है, पर यह सच है क्योंकि बाइबल में लिखा है. परमेश्वर कि त्रिएकता कि शिक्षा एक ऐसी ही शिक्षा है, जो हम सीमित दिमाग से कभी पूरी तरह नहीं समझ सकते, परन्तु हम इसके सामने समर्पण करतें हैं.

जब हम बाइबल कि इज़्ज़त करते हैं और विनम्र और आराधनामय ह्रदय से इसको ग्रहण करते हैं, तो धीरे धीरे इसकी समझ में बढ़ते हैं. ऐसी ही एक और चीज़ हम बाइबल में पाते हैं और शुरुआत में हम इसको पढ़ कर चकरा जातें हैं कि ये कैसे संभव है. पर जो बाइबल के सामने समर्पण कर देता है, परमेश्वर उनको अपनी बातें और भी अच्छी रीति से समझाता है. पर दुर्भाग्य कि बात है कि कुछ लोग अपने मन को मोटा कर लेते हैं और

बाइबल के इस अथाह और अगम्य  परमेश्वर को अस्वीकार करके, बाइबल में से ही कुछ आयतें सन्दर्भ के बाहर लेके मनुष्य कि समानता और स्वरुप में एक ईश्वर बना लेते हैं. आर्मिनवादी भी ऐसा ही करते हैं; कैल्विनवादियों ने इनकी झूठीं शिक्षाओं का खंडन किया है और बाइबल कि परमेश्वर केंद्रित शिक्षाएं दी.

*(कैल्विनवाद और आर्मिनवाद की परिभाषाएँ जानने के लिए लिंक पर क्लिक करें: https://logosinhindi.com/arminians-inconsistent-theology-and-prayer-in-hindi/)*

नीचे मैं परमेश्वर की तीन इच्छाओं पर प्रकाश डालूंगा और  कैल्विनवाद और आर्मिनवाद के बीच के तनाव को स्पष्ट करूँगा. जी हाँ, परमेश्वर की तीन इच्छाएं हम बाइबल में देखते हैं. परमेश्वर हम सीमित लोगों के लिए बहुत ही जटिल और अथाह हैं. हम इनको पूरी तरह नहीं समझ पाएंगे, परन्तु वचन के सामने समर्पण करके धीरे धीरे इनकी समझ में बढ़ेंगे.

## 1.परमेश्वर की संप्रभु इच्छा:

परमेश्वर की संप्रभु इच्छा उस इच्छा को कहते हैं जिसका कोई प्रतिरोध नहीं कर सकता. यह इच्छा परमेश्वर की भाग्य निर्धारण सम्बन्धी इच्छा है. परमेश्वर ने इस इच्छा के अंतर्गत ही सम्पूर्ण मानव इतिहास का भाग्य निर्धारण जगत की उत्पत्ति से पहले अनंत में ही कर दिया था. जो कुछ भी अच्छा और बुरा इस दुनिया में हो रहा है अंततः परमेश्वर के लिए और उसकी महिमा के लिए ही हो रहा है. इस इच्छा को और समझने के लिए हम दो उदहारण लेंगे:

**उदाहरण 1:**

बाइबल स्पष्ट रीति से कहती है की प्रभु यीशु मसीह परमेश्वर के पूर्वनिर्धारण के अंतर्गत मारा गया. परमेश्वर की इस संप्रभु इच्छा को कोई रोक नहीं सकता था. यह होना ही था, परन्तु क्या यहूदा इस्करियोती, पिलातुस, फरीसी आदि इस पाप के लिए जिम्मेदार नहीं. हैं, वे ही जिम्मेदार है. परमेश्वर सिर्फ भाग्य निर्धारण करता है; पाप के जिम्मेदार मनुष्य और शैतान ही होतें है. आप परमेश्वर की सम्प्रभुता और मनुष्य की जिम्मेदारी को समझने के लिए इन आयतों को पढ़िए:

*उसी को जब वह परमेश्वर की ठहराई हुई योजना और पूर्वज्ञान के अनुसार पकड़वाया गया, तो तुम ने अधर्मियों के हाथ से उसे क्रूस पर चढ़वा कर मार डाला। (प्रेरितों 2:23)*

*और तुम ने जीवन के कर्ता को मार डाला. (प्रेरितों 3:15)*

*क्योंकि सचमुच तेरे सेवक यीशु के विरोध में, जिस तू ने अभिषेक किया, हेरोदेस और पुन्तियुस पीलातुस भी अन्य जातियों और इस्त्राएलियों के साथ इस नगर में इकट्ठे हुए। कि जो कुछ तेरे हाथ (तेरी सामर्थ) और तेरे उद्देश्य ने पूर्वनिर्धारित किया था वही करें। । (प्रेरितों 4:27-28)*

**उदाहरण 2:**

*और अभी तक न तो बालक जन्मे थे, और न उन्होंने कुछ भला या बुरा किया था कि उस ने कहा, कि जेठा छुटके का दास होगा।*

*इसलिये कि परमेश्वर की मनसा जो उसके चुन लेने के अनुसार है, कर्मों के कारण नहीं, परन्तु बुलाने वाले पर बनी रहे।*

*जैसा लिखा है, कि मैं ने याकूब से प्रेम किया, परन्तु एसौ को अप्रिय जाना।। (रोमियों 9:11-13)*

आपने देखा कि उन जुड़वां बच्चों के पैदा होने से पहले ही, परमेश्वर ने याकूब को चुन लिया और एसाव को नहीं?

*क्योंकि वह मूसा से कहता है, "मैं जिस किसी पर दया करना चाहूँ, उसी पर दया करूँगा, और जिस किसी पर कृपा करना चाहूँ उसी पर कृपा करूँगा। इसलिए यह न तो चाहनेवाले की, न दौड़नेवाले की परन्तु दया करनेवाले परमेश्वर की बात है।" (रोमियों 9:15–16)*

यहां आपने देखा कि परमेश्वर जिस किसी को भी बचाना चाहते हैं बचाते हैं और दूसरों को अस्वीकृत कर देतें हैं।

परमेश्वर ने भाग्य निर्धारण कर रखा है की कौन स्वर्ग जायेगा और कौन नरक. परमेश्वर किसी का कर्जदार नहीं है. यदि वो सबको नरक भेज दे, तो भी वो धर्मी ओर न्यायी ही रहेगा, क्योंकि हम अपने पापों के लिए जिम्मेदार हैं ओर नरक के ही योग्य हैं. परमेश्वर ने कुछ लोगों को चुन लिया ओर बाकी को छोड़ दिया. जो स्वर्ग जातें हैं उनको अनुग्रह मिला (जिसके वो योग्य ना थे). जो नरक जातें हैं उनको न्याय मिला (जिसके वो योग्य थे). किसी को भी अन्याय नहीं मिला.

**उदहारण 3**

*इसलिये आओ मसीह की शिक्षा की आरम्भ की बातों को छोड़ कर, हम सिद्धता की ओर आगे बढ़ते जाएं ..... और यदि परमेश्वर चाहे, तो हम यही करेंगे। (इब्रानियों 6:1-3)*

यहाँ पर हम देखते हैं की हम सिद्धता की और कितना बढ़ेंगे अर्थात कितनी आत्मिक उन्नति करेंगे- ये परमेश्वर की संप्रभु इच्छा पर ही निर्भर करता है. उसी की संप्रभु इच्छा के अन्तर्गत कोई तीस, कोई साठ और कोई नब्बे गुना फल लाएगा. कोई उसके इस पूर्व निर्धारण से ज्यादा आत्मिक उन्नति नहीं कर सकता.

*(परमेश्वर की इस इच्छा के बारे में और भी जानने के लिए आप इन दो लिंक्स पर क्लिक कीजिये: https://logosinhindi.com/compatibilism-in-hindi/)*

## 2. परमेश्वर की प्रकट इच्छा:

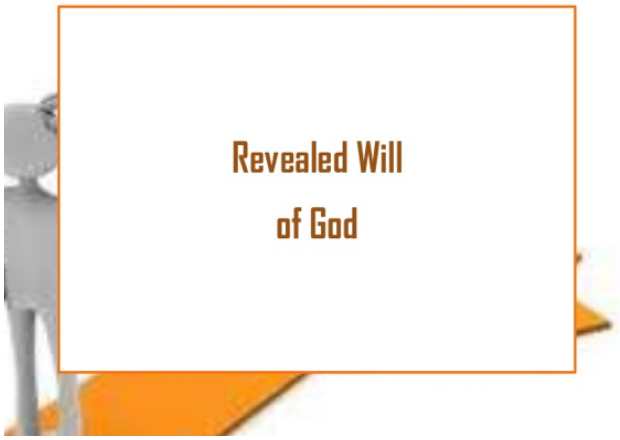


परमेश्वर की प्रकट इच्छा उसकी आज्ञाएं हैं. वो अपने पवित्र चरित्र के अनुसार लोगों को आज्ञाएं देता है. दस आज्ञाएं इसी का उदहारण है. आइये हम परमेश्वर की प्रकट या आदेशात्मक इच्छा को तीन उदाहरणों से समझें और साथ ही साथ उनकी तुलना ऊपर दिए गए संप्रभु इच्छा के तीन उदाहरणों से करें:

**उदहारण 1:**

*झूठे मुकद्दमे से दूर रहना, और निर्दोष और धर्मी की हत्या न करना, क्योंकि मैं दुष्ट को निर्दोष न ठहराऊंगा। (निर्गमन 23:7)*

परमेश्वर की सम्पूर्ण मानव जाती के लिए प्रकट या आदेशात्मक इच्छा यह है की कोई किसी निर्दोष और धर्मी व्यक्ति की हत्या ना करें. परन्तु जैसा की हमने ऊपर देखा परमेश्वर ने अपनी संप्रभु इच्छा के अंतर्गत जगत की उत्पत्ति से पहले ही  अपने चुने हुओं को बचाने के लिए यीशु मसीह की हत्या की योजना बना ली थी और यह निश्चित कर दिया था की ऐसा होगा.

**उदाहरण 2:**

*परमेश्वर हर जगह हर मनुष्य को मन फिराने की आज्ञा देता है। (प्रेरितों 17:30)*

परमेश्वर की सम्पूर्ण मानव जाती के लिए प्रकट या आदेशात्मक इच्छा यह है की सब उद्धार पाने के लिए पश्चाताप करें पर हमने ऊपर देखा की परमेश्वर ने अपनी संप्रभु इच्छा के अनुसार यह निर्धारित कर दिया कि कौन पश्चाताप करके उद्धार पायेगा और कौन नहीं. इसके लिए एक और आयत आप देखिये:

*जितने अनन्त जीवन के लिये ठहराए गए थे, उन्होंने विश्वास किया। (प्रेरितों 13:48)*

उदाहरण 3:

*पर जैसा तुम्हारा बुलाने वाला पवित्र है, वैसे ही तुम भी अपने सारे चाल चलन में पवित्र बनो। क्योंकि लिखा है, कि पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूं। (1 पतरस 1:25-26)*

*इसलिये चाहिये कि तुम सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है॥ (मत्ती 5:48)*

परमेश्वर कि प्रकट और आदेशात्मक इच्छा यह है कि हम पूरी तरह पवित्र हो जाएँ, परन्तु ऊपर उदाहरण तीन में हमने देखा कि परमेश्वर ने अपनी संप्रभु इच्छा के अन्तर्गत यह निर्धारित कर रखा है कि आत्मिक उन्नति में अर्थात पवित्रता में कौन कितना बढ़ेगा.

## 3.परमेश्वर की स्वाभाविक इच्छा:

परमेश्वर कि स्वाभाविक इच्छा को उसकी परोपकारी इच्छा भी कहतें हैं. इस इच्छा का अर्थ होता है कि परमेश्वर सबके प्रति सद्भावना रखता है. वह किसी के प्रति दुर्भावना नहीं रखता. परमेश्वर स्वाभाविक रूप से परोपकार करता है. वह किसी का बुरा नहीं चाहता. उसकी दया के काम सम्पूर्ण सृष्टि में देखे जा सकतें हैं. वह धर्मियों और अधर्मियों दोनों के लिए बारिश बरसाता है और दोनों के लिए सूरज उगाता है (मत्ती 5:45). परमेश्वर कि स्वाभाविक इच्छा को समझने के लिए इस आयत को देखिये:

*"प्रभु यहोवा की यह वाणी है, क्या मैं दुष्ट के मरने से कुछ भी प्रसन्न होता हूँ? क्या मैं इस से प्रसन्न नहीं होता कि वह अपने मार्ग से फिरकर जीवित रहे?" (यहेजकेल 18:23)*

वह अधर्मियों कि मृत्यु से प्रसन्न नहीं होता. कहने का अर्थ है कि परमेश्वर अपने दुश्मनों के विनाश से कोई पापमय आनंद नहीं उठाता. परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि अधर्मी का विनाश करके और न्याय कि स्थापना करने में उसे आनंद नहीं आता. उसे पवित्र आनंद कि अनुभूति होती है. यहाँ तक कि वह स्वर्ग में संतों को भी अधर्मियों के विनाश और न्याय कि स्थापना के लिए आनंद मानाने कि आज्ञा देता है.

*और जैसे अब यहोवा की तुम्हारी भलाई और बढ़ती करने से हर्ष होता है, वैसे ही तब उसको तुम्हें नाश वरन सत्यानाश करने से हर्ष होगा. (व्यवस्थाविवरण 28:63)*

*हे स्वर्ग, और हे पवित्र लोगों, और प्रेरितों, और भविष्यद्वक्ताओं, उस पर आनन्द करो, क्योंकि परमेश्वर ने न्याय करके उस से तुम्हारा पलटा लिया है।। (प्रकाशितवाक्य 18:20)*

क्या परमेश्वर के चरित्र में कोई विरोध या विसंगति है. नहीं बिल्कुल नहीं. परमेश्वर का दुष्टों कि मृत्यु पर प्रसन्न होना भी उसकी स्वाभाविक या परोपकारी इच्छा का ही हिस्सा है. क्या आपको किसी हत्यारे और बलात्कारी को मृत्यु दंड दिए जाने पर हर्ष नहीं होता?

## उपसंहार:

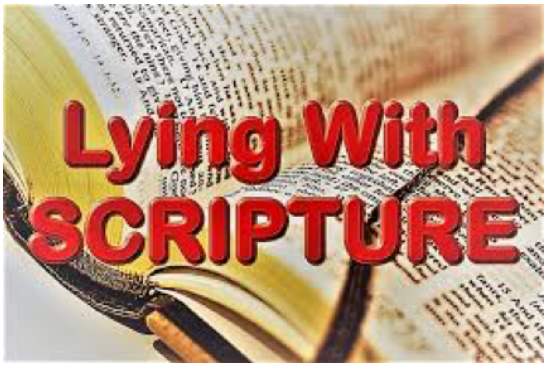


आर्मिनवादी बाइबल में से परमेश्वर कि प्रकट और स्वाभाविक इच्छा से सम्बंधित आयतें उठाकर यह कहते हैं कि परमेश्वर तो सब का उद्धार करने कि कोशिश कर रहा है पर मनुष्य नहीं मान रहा. ये लोग परमेश्वर कि संप्रभु इच्छा से सम्बंधित हजारों आयतों को या तो अनदेखा कर देते हैं या उनमे से कुछ को लेकर उनको तोड़ते मरोड़ते हैं. और इनका उद्देश्य क्या है? यही सिद्ध करना कि परमेश्वर संप्रभु और भाग्य निर्धारण करने वाला नहीं है, परन्तु मनुष्य संप्रभु है और अपने भाग्य का विधाता है. इनके अनुसार निम्नांकित और ऐसी ही हजारों आयतें बदल देनी चाहिए:

**बाइबल कि आयत:** मनुष्य के कदम यहोवा की ओर से दृढ़ होतें हैं. (भजन 37:23)

**आर्मिनवादी आयत:** यहोवा के कदम मनुष्य की ओर से दृढ़ होतें हैं.

**बाइबल कि आयत:** "जो (परमेश्वर) अपनी इच्छा के मत के अनुसार सब कुछ करता है." (इफिसियों 1:11)

**आर्मिनवादी आयत:** "जो (परमेश्वर) इंसान से पूछ-पूछ कर सब कुछ करता है."

**बाइबल कि आयत:** "मैं तो अन्त की बात आदि से और प्राचीनकाल से उस बात को बताता आया हूं जो अब तक नहीं हुई। मैं कहता हूं, मेरी योजना स्थिर रहेगी और मैं अपनी (संप्रभु) इच्छा को पूरी करूंगा।"(यशायाह 46:10)

**आर्मिनवादी आयत:** "मैं तो अन्त की बात आदि से और प्राचीनकाल से उस बात को बताता आया हूं जो अब तक नहीं हुई। मैं कहता हूं, मनुष्य कि योजना स्थिर रहेगी और मैं मनुष्य कि (संप्रभु) इच्छा को पूरी करूंगा।"

**बाइबल कि आयत:** "मैं जिस किसी पर दया करना चाहूँ, उसी पर दया करूँगा, और जिस किसी पर कृपा करना चाहूँ उसी पर कृपा करूँगा। इसलिए यह न तो चाहनेवाले की, न दौड़नेवाले की परन्तु दया करनेवाले परमेश्वर की बात है।" (रोमियों 9:15–16)

**आर्मिनवादी आयत:** "मैं नरक के योग्य परन्तु स्वतंत्र इच्छाधारी पापी मनुष्य का कर्जदार हूँ। इसलिए यह दया करने वाले परमेश्वर की बात नहीं; यह तो चाहनेवाले और दौड़नेवाले मनुष्य की बात है।"

*इस विषय को और भी अधिक समझने के लिए आप निम्न लेख भी पढ़ें:*

*https://logosinhindi.com/compatibilism-in-hindi/*

*https://logosinhindi.com/whose-choice-saved-you-yours-or-gods-hindi/*

*https://logosinhindi.com/gods-sovereignty-in-salvation/*

## पश्च-लेख (P.S)

## संप्रभु इच्छा और प्रकट इच्छा पर एक टिपण्णी:

परमेश्वर की संप्रभु इच्छा हमेशा हर जगह पूरी हुई है और हो रही है और होगी. आप इन आयतों के द्वारा यह समझ सकते हैं:

*यहोवा आसमान में, पृथ्वी पर, समुद्र में और गहरे समुद्र में भी वही करता है जो वो चाहता है. (भजन 135:6)*

*मैं जानता हूँ कि तू सब कुछ कर सकता है, और तेरी युक्तियों में से कोई रुक नहीं सकती। (अय्यूब 42:2)*

*यहोवा ने सब वस्तुएं विशेष उद्देश्य के लिये बनाईं हैं, वरन दुष्ट को भी विनाश के लिये बनाया है। (नीतिवचन 16:4)*

*सेनाओं के यहोवा ने यह शपथ खाई है, नि:सन्देह जैसा मैं ने ठाना है, वैसा ही हो जाएगा, और जैसी मैं ने युक्ति की है, वैसी ही पूरी होगी. (यशायाह 14:24)*

*क्योंकि सेनाओं के यहोवा ने युक्ति की है और कौन उसका टाल सकता है? उसका हाथ बढ़ाया गया है, उसे कौन रोक सकता है? ((यशायाह 14:27)*

*क्योंकि उस की ओर से, और उसी के द्वारा, और उसी के लिये सब कुछ है: उस की महिमा युगानुयुग होती रहे: आमीन. (रोमियों 11:36)*

*क्योंकि राज्य, सामर्थ और महिमा तेरी ही है. (मत्ती 6:13)*

प्रभु की प्रार्थना की आखरी पंक्ति में लिखा है की राज्य, सामर्थ और महिमा सदा उसी की है. यह पंक्ति उसकी सम्प्रभुता को दर्शाती है. परन्तु इस प्रार्थना की दूसरी पंक्ति कहती है:

*"तेरा राज्य आये; तेरी इच्छा पृथ्वी पर वैसे ही पूरी हो जैसे स्वर्ग में पूरी होती है." (मत्ती 6:10)*

हमने तो ऊपर पढ़ा की राज्य पहले से उसी का है और उसकी इच्छा आसमान में, पृथ्वी पर और समुद्र में- हर जगह पूरी होती है. फिर किस अर्थ में पृथ्वी पर उसकी इच्छा पूरी नहीं हो रही? इसका उत्तर आसान है जो की आप समझ भी गए होंगे. जी हाँ, पृथ्वी पर उसकी प्रकट या आदेशात्मक इच्छा पूरी नहीं हो रही है और उसी के लिए प्रभु ने हमे प्रार्थना करना सिखाया है.

परमेश्वर प्रकट या आदेशात्मक इच्छा के आधार पर अविश्वासियों का न्याय करके उन्हें नरक में भेजेगा, क्योंकि वो अपने पाप के कारण इसी योग्य हैं. और इसी इच्छा के आधार पर विश्वासियों का न्याय करके उन्हें स्वर्ग में छोटा या बड़ा बनाएगा.

# Chapter 2: नया जीवन और बपतिस्मा

---

(रोमियो 6:3-4)

*दो प्रकार के बपतिस्मा के बारे में हम सुनते हैं:*

**1- छिड़काव का बपतिस्मा**

कुछ ईसाई पंथों (denominations) में नवजात शिशु या नए विश्वासी को छिड़काव का बपतिस्मा देने की प्रथा है परन्तु बाइबल में इस प्रकार का बपतिस्मा देने का कहीं कोई प्रावधान नहीं है अर्थात यह बाइबल के विपरीत है।

**2- डुबकी का बपतिस्मा**

दूसरा बपतिस्मा है डुबकी का बप्तीस्मा। इस बपतिस्मे में पानी में डुपकी का मतलब है मसीह के साथ मरना और गाड़ा जाना एवं पानी से बाहर आने का मतलब है मसीह के साथ जी उठना।

इसलिए डुबकी का बपतिस्मा ही एक मात्र तरीका है जो **मसीह के साथ गाड़े जाने और वापस जी उठने**

**को दर्शाता है** जैसा कि रोमियो 6:3-4 में लिखा है:
हम, जिन्होंने यीशु मसीह में बपतिस्मा पाया है, उसकी मृत्यु का बपतिस्मा पाया है। सो उसकी मृत्यु में बपतिस्मा पाने से हम भी उसके साथ ही गाड़ दिये गये ताकि *जैसे परमपिता की महिमामय शक्ति के द्वारा यीशु मसीह को मरे हुओं में से जिला दिया गया था, वैसे ही हम भी एक नया जीवन पायें।* (रोमियो 6:3-4 में पानी के बपतिस्मे की बात नहीं हो रही पर आत्मिक बपतिस्मे की बात हो रही है, जो परमेश्वर उद्धार के समय हमे देता है. इस बपतिस्मे में **हमारा पुराना मनुष्यत्व मर जाता है और नया आत्मिक मनुष्यत्व जी उठता है.** पानी के बपतिस्मे में हम इसी आत्मिक बपतिस्मे को दर्शाते हैं.)

**बपतिस्मे से उद्धार?**

बपतिस्मा उद्धार पाने के लिए आवश्यक नहीं क्योंकि उद्धार अनुग्रह से होता है (इफिसियों 2:8-9; तितुस 3:5), पर *उद्धार पाए हुए को वचन की आज्ञानुसार अपने विश्वास की प्रकट में उद्घोषणा करना है* जो यह दर्शाता है कि हम पुरानी आत्मिक मृत्यु से जिलाये गए हैं और मसीह में एक नई सृष्टि बन गए हैं (2 कुरूंथियों 5:17)।

**दुबारा बपतिस्मा?**

सामान्य प्रश्न यह आता है कि अगर किसी ने बपतिस्मा पहले किसी के दबाव में, बिना पूरी समझ और ज्ञान के, बचपन में या फिर उद्धार पाने से पहले ही ले लिया तो क्या करें?
ध्यान से समझिए, **बपतिस्मा का उद्देश्य ही नए जीवन का प्रतीक प्रस्तुत करना है** और अगर किसी ने नया जीवन पाया ही नहीं है तो फिर कैसा प्रतीक प्रस्तुत करना?
जो मसीह में मरा ही नहीं तो फिर मसीह में जीएगा कैसे ?
जो काम हुआ ही नहीं तो उसे प्रदर्शित कैसे करें?
जब आपका उद्धार नहीं हुआ था और आप फिर भी अपने आप को मसीही बताते थे तो वह नकली मसीहीपन था। अब जब आप **परमेश्वर की दया से असली मसीही बन गए हो (इफिसियों 2:8-9; तितुस 3-5)** तो फिर तो आपको गवाही के साथ बपतिस्मा लेना चाहिए ताकि बाकी लोगों को आपके वास्तविक परिवर्तित जीवन के बारे में पता लगे और आप अपने नए हो जाने को परमेश्वर की महिमा के लिए प्रदर्शित करें और जो अभी भी नकली और मात्र दिखावे का मसीही जीवन जी रहे हैं उन्हें भी ज्ञात हो कि सच्ची मसीहियत क्या है और उन्हें भी मन फिराने का सन्देश मिल सके।

आपकी गवाही के द्वारा नामधारी मसीहियों की आंखें खुल सके कि **वास्तविकता में मसीही होने का मतलब मसीही परिवार में जन्म होना सिर्फ चर्च में उपस्थित होना, बाइबल पढ़ लेना, सन्डे स्कूल में आना, किसी प्रोग्राम में भाग लेना, दान दशमांश देना, जय मसीह की बोलना, मधुर आवाज और मसीही तमीज़ के द्वारा अपने अंदर की सड़ाहट को छुपाना, रटी रटाई प्रार्थना करना, ऐसी अन्य अन्य गतिविधियों में भाग लेना नहीं है.** अनेक धर्मों के लोग भी तो बहुत सारे धार्मिक काम और अनेक गतिविधियां करते हैं तो क्या उनका भी उद्धार हुआ है? ऐसी बहुत सारी गतिविधियां तो फरीसी लोग भी करते थे और बहुत अच्छे से करते थे, लेकिन उनके मन नहीं बदले थे तभी तो ऐसे काम करने वालों को मसीह ने फटकार लगाई गई थी (मती 3:7-8; मती 23).

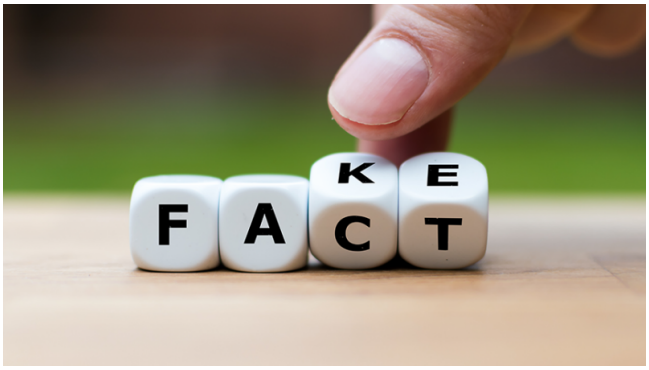


*मेरे कहने का तात्पर्य समझिए:*

हम सब बहुत अच्छे से दिखावा करना जानते है. खुद को देखिए क्या आप नाटक नहीं करते? अपने गलत कामों को छुपा कर अपने आप को अच्छा दिखाने का भरसक प्रयास नहीं करते? हम सब ढोंगी है इसीलिए **जो दिखाई दे वो जरूरी नहीं कि सच हो** ( 2 कुरूंथियो 13:5).

निसंदेह हमे धार्मिकता के काम करने है और तमाम मसीही गतिविधियां में भाग भी लेना है, पर धोखे में नहीं जीना, क्योंकि सच्चा मसीही होना बिल्कुल नया होना है. *यदि कोई अब चर्च में पाया जाता है और फिर भी वैसे ही जीता है जैसे पहले जीता था, वैसे ही बातें करता है, वैसे ही काम करता है, उसे अब भी संसार से उतना ही प्यार है, तो वो नई सृष्टि कैसे हुआ ?* वह तो फरीसी ही है और सांसारिक मनुष्य ही है और अभी भी अपने पापों में मरा हुआ है पर दिखावे के लिए मसीह के नाम का चोगा पहना हुआ है. ऐसे लोग उनमें से है जो नरक में ज्यादा सजा पाएंगे अगर समय रहते अपने पुराने कामों से मन ना फिराएंगे तो (इब्रानियों 10:26-31).

**क्योंकि परमेश्वर काम करें और परिवर्तन ना हो,**

असम्भव !

(2 कुरंथियों 5:17)

## Chapter 3: प्रश्न : “तौभी बच्चे जनने के द्वारा उद्धार पाएंगी, यदि वे संयम सहित विश्वास, प्रेम, और पवित्रता में स्थिर रहें॥” ( 1 तीमुथियुस 2:15) इस आयत का मतलब क्या है? क्या स्त्रियां वास्तव मे बच्चा जनने के द्वारा उद्धार पाएंगी?

---

**उत्तर:** नहीं. असंभव. हम जानते हैं की उद्धार बच्चे जन्माने (**इफिसियों 2:6-9**) के दवारा नहीं होता  बल्कि पवित्र आत्मा से जन्मने के दवारा होता है (**यूहन्ना 3:5**).
**1 तीमुथियुस 2:15** एक कठिन आयत है. ऐसी कठिन आयतों की व्याख्या करने के लिए हमे तीन  बातें ध्यान रखनी चाहिए. पहली की सम्पूर्ण बाइबिल इस बारे में क्या कहती हैं. दूसरी की इस पद का सन्दर्भ क्या हैं. तीसरी की हमें अपनी ही व्याख्या पर अडिग  नहीं हो जाना चहिये. हम जानते हैं की सम्पूर्ण बाइबिल कहती हैं की उद्धार सिर्फ अनुग्रह से होता हैं  और इस पद का सन्दर्भ जनने के लिए हम इन सब पंक्तियों को पड़ेंगे:

*“वैसे ही स्त्रियां भी संकोच और संयम के साथ सुहावने वस्त्रों से अपने आप को संवारे; न कि बाल गूंथने, और सोने, और मोतियों, और बहुमोल कपड़ों से, पर भले कामों से।*
*क्योंकि परमेश्वर की भक्ति ग्रहण करने वाली स्त्रियों को यही उचित भी है।*
*और स्त्री को चुपचाप पूरी आधीनता में सीखना चाहिए।*
*और मैं कहता हूं, कि स्त्री न उपदेश करे, और न पुरूष पर आज्ञा चलाए, परन्तु चुपचाप रहे।*
*क्योंकि आदम पहिले, उसके बाद हव्वा बनाई गई।*
*और आदम बहकाया न गया, पर स्त्री बहकाने में आकर अपराधिनी हुई।*
*तौभी बच्चे जनने के द्वारा उद्धार पाएंगी, यदि वे संयम सहित विश्वास, प्रेम, और पवित्रता में स्थिर रहें॥” (**1 तिमुथियस 2:9-15**)*

इस सन्दर्भ में  पौलुस स्त्रियों को निर्देश दे रहा हैं की वे  संयम, विश्वास, पवित्रता , प्रेम आदि से सुसज्जित  और  पुरुष के अधीन रहे; कलीसिया की मुखिया बनने या पुरुष पर प्रभुता करने की कोशिश न करे . इसका कारण भी पौलुस ने दिया हैं. इसलिए क्योंकि पहले पुरुष सिरजा गया और

स्त्री ने पहले पाप किया. ये कोई सांस्कृतिक कारण नहीं हैं बल्कि परमेश्वर के दवारा ठहराया क्रम हैं. पुरुष सिर हैं और स्त्री उसके अधीन रहेगी.

चलिए अब चलते हैं **1 तिमुथियस 2:15** की व्याख्या करने. इसका मतलब अलग अलग बाइबिल विद्वानों ने अलग अलग बताया है. हम तीन मुख्य और विश्वसनीय दृष्टिकोणों को देखेंगे:

**1**.कुछ टीकाकार इस आयत को **उत्पत्ति 3:15** से जोड़ कर देखते हैं जिसमे लिखा है की स्त्री का पुत्र शैतान का सर कुचलेगा और मानव जाती को उद्धार देगा. इन टीकाकारों का कहना है की स्त्री (मूलतः हव्वा) पर अपने पति (आदम) की अधीनता छोड़ कर स्वतंत्र रूप से अपने निर्णय लेने का पाप या कलंक था. भलाई और बुराई के ज्ञान के फल के बारे में पति से पाए निर्देश की उसने उपेक्षा की और उसकी अधीनता में रहकर उसकी बात मानने के बजाय स्वतंत्र रूप से कार्य किया, पर वो हव्वा (स्त्री) इस पाप और कलंक से पुत्र (यीशु मसीह) जनने के दवारा उद्धार पायेगी. कहने का अर्थ हैं की **उत्पत्ति 3:15** पूरा हो जाने के कारण स्त्रियां अपने पांपों से उद्धार पाएंगी.

**2.**कुछ विद्वानों के अनुसार बच्चा जनना यहाँ अक्षरक्षः नहीं ले सकते. यहाँ गुणोक्ती या लक्षणोक्ति अलंकार (metonymy) हैं. इस अलंकार में एक शब्द अपना अक्षरक्षः अर्थ नहीं देकर अपने से सम्बंधित कोई और अर्थ देता हैं, जैसे कलम तलवार से अधिक शक्तिशाली हैं. यहाँ कलम का मतलब प्लास्टिक की कलम नहीं है. प्लास्टिक की कलम अक्षरक्षः तलवार से ज्यादा शक्तिशाली नहीं हो सकती. यहाँ कलम का मतलब हैं लिखा हुआ शब्द या किताबें. इसी तरह **1 तीमुथियुस 2:15** में "बच्चे जन्म" देने का मतलब बच्चे पैदा करना नहीं हैं बल्कि बच्चे जन्मना वहां गुणोक्ती अलंकार हैं और परमेश्वर के लिए धर्मी बच्चे बड़े करने, उनको शिक्षा देने, पति के अधीन रहने , घर का अच्छा प्रबंधन करने जैसे सम्पूर्ण कर्तव्यों को अपने अंदर समाहित कर लेता है.

इस हिसाब से सही सन्दर्भ में इस पद का मतलब होगा की स्त्री घर की और चर्च की मुखिया बनने की कोशिश करना छोड़ (**1 तिमुथियस 2:11-12**) कर परमेश्वर दवारा दिए गए अपने सम्पूर्ण कर्तव्यों को करने के दवारा उद्धार पायेगी. परन्तु यहाँ भी एक समस्या आ गई. क्या स्त्री अपने दायित्वों का सही निर्वहन करने अर्थात कर्मों के दवारा उद्धार पायेगी? नहीं, कदापि नहीं. क्योंकि उद्धार तो सिर्फ अनुग्रह से होता हैं. फिर? ये सिर्फ बात को कहने का तरीका हैं. जैसे **मति 5:44-45** मे लिखा हैं की यदि तुम अपने दुश्मनो से प्रेम करो और उनके लिए प्रार्थना करो तो स्वर्गीय पिता की संतान ठहरोगे .
क्या कोई कर्मो के दवारा स्वर्गीय पिता की संतान ठहरता हैं. नहीं, स्वर्गीय पिता की संतान पवित्र आत्मा से जन्मने के दवारा बनते हैं . कहने का मतलब हैं की जो उद्धार पाया हैं और स्वर्गीया पिता की संतान हैं उसमे ये चिन्ह होंगे – वे अपने दुश्मनो से प्रेम करेंगे और उनके लिए प्रार्थना करेंगे. **1 तिमुथियस 4:16** में लिखा हैं की यदि तिमुथियस अपना चल चलन अच्छा रखेगा और सही शिक्षा में बना रहेगा तो अपना और अपने सुनने वालों का उद्धार करवाएगा. इस आयत में भी इसका मतलब

ये नहीं की तिमुथियस अच्छे चाल चलन और सही शिक्षा के दवारा उद्धार पायेगा, परन्तु यह की सच्चे विश्वासी में अच्छा चल चलन और सही शिक्षा के चिन्ह होते हैं. इसी प्रकार से स्त्री भी अपने दायित्वों को पूरा करने के दवारा उद्धार नहीं पाएगी बल्कि यह की यदि वो उद्धार पाई हैं तो वो पति पर और कलीसिया की मुखिया बनने की कोशिश करना (**1 तिमुथियस 2:11-12**) छोड़ कर अधीनता में रहेगी और संयम , विश्वास, प्रेम, और पवित्रता उसेक जीवन में दिखेंगे.

**3**. कुछ और विद्वान हैं जो कहते हैं की यूनानी शब्द सोज़ो का मतलब जरुरी नहीं की उद्धार ही हो सोज़ो का मतलब किसी विपत्ति, परेशानी आदि से बचाना या छुड़ाना भी हो सकता हैं. **मति 8:25,, 9:21-22, 24:22, 2 तिमुथियस 4:18** आदि में यही शब्द उद्धार के लिए नहीं बल्कि किसी विपत्ति से छुड़ाने या बचाने के लिए इस्तेमाल किया गया हैं. इन विद्वानों के अनुसार सोज़ो का अर्थ यहाँ एक कलंक से छूटना हैं. स्त्री पर मनुष्य जाती को पाप में ले जाने का माध्यम बनने और पहले पाप करने (**1 तिमुथियस 2:14**) का कलंक हैं और उस कलंक से वो छूट सकती हैं या बच सकती हैं – परमेश्वर के लिए धर्मी बच्चों को बड़ा करने और संयम, विश्वास, प्रेम और पवित्रता में स्थिर रह कर.

# Chapter 4: इफिसियों 1:3-12 पर मनन करें और याद करने का प्रयास करें

1:3
हमारे प्रभु यीशु मसीह का पिता और परमेश्वर धन्य हो। उसने हमें मसीह के रूप में स्वर्ग के क्षेत्र में हर तरह के आशीर्वाद दिये हैं।
1:4
संसार की रचना से पहले ही परमेश्वर ने हमें, जो मसीह में स्थित हैं, अपने सामने पवित्र और निर्दोष बनने कि लिये चुना। हमारे प्रति उसका जो प्रेम है उसी के कारण उसने यीशु मसीह के द्वारा हमें अपने बेटों के रूप में स्वीकार किये जाने के लिए नियुक्त किया। यही उसकी इच्छा थी और यही प्रयोजन भी था।
1:5
संसार की रचना से पहले ही परमेश्वर ने हमें, जो मसीह में स्थित हैं, अपने सामने पवित्र और निर्दोष बनने कि लिये चुना। हमारे प्रति उसका जो प्रेम है उसी के कारण उसने यीशु मसीह के द्वारा हमें अपने बेटों के रूप में स्वीकार किये जाने के लिए नियुक्त किया। यही उसकी इच्छा थी और यही प्रयोजन भी था।
1:6
उसने ऐसा इसलिए किया कि वह अपनी महिमाय अनुग्रह के कारण स्वयं को प्रशंसित करे। उसने इसे हमें, जो उसके प्रिय पुत्र में स्थित हैं मुक्त भाव से प्रदान किया।
1:7
उसकी बलिदानी मृत्यु के द्वारा अब हम अपने पापों से छुटकारे का आनन्द ले रहे हैं। उसके सम्पन्न अनुग्रह के कारण हमें हमारे पापों की क्षमा मिलती है। अपने उसी प्रेम के अनुसार जिसे वह मसीह के द्वारा हम पर प्रकट करना चाहता था।
1:8
उसने हमें अपनी इच्छा के रहस्य को बताया है।
1:9
जैसा कि मसीह के द्वारा वह हमें दिखाना चाहता था।
1:10
परमेश्वर की यह योजना थी कि उचित समय आने पर स्वर्ग की और पृथ्वी पर की सभी वस्तुओं को मसीह में एकत्र करे।
1:11
सब बातें योजना और परमेश्वर के निर्णय के अनुसार की जाती हैं। और परमेश्वर ने अपने निजी प्रयोजन के कारण ही हमें उसी मसीह में संत बनने के लिये चुना है। यह उसके अनुसार ही हुआ जिसे परमेश्वर ने अनादिकाल से सुनिश्चित कर रखा था।
1:12
ताकि हम उसकी महिमा की प्रशंसा के कारण बन सकें। हम, यानी जिन्होंने अपनी सभी आशाएँ मसीह पर केन्द्रित कर दी हैं।

## Chapter 5: यहुन्ना 10 की निम्न आयतों  पर मनन करें और याद करने का प्रयास करें: 14-16; 25-29

10:14
“अच्छा चरवाहा मैं हूँ। अपनी भेड़ों को मैं जानता हूँ और मेरी भेड़ें मुझे वैसे ही जानती हैं जैसे परम पिता मुझे जानता है और मैं परम पिता को जानता हूँ। अपनी भेड़ों के लिए मैं अपना जीवन देता हूँ।
10:15
“अच्छा चरवाहा मैं हूँ। अपनी भेड़ों को मैं जानता हूँ और मेरी भेड़ें मुझे वैसे ही जानती हैं जैसे परम पिता मुझे जानता है और मैं परम पिता को जानता हूँ। अपनी भेड़ों के लिए मैं अपना जीवन देता हूँ।
10:16
मेरी और भेड़ें भी हैं जो इस बाड़े की नहीं हैं। मुझे उन्हें भी लाना होगा। वे भी मेरी आवाज सुनेगीं और इसी बाड़े में आकर एक हो जायेंगी। फिर सबका एक ही चरवाहा होगा।

10:25
यीशु ने उत्तर दिया, “मैं तुम्हें बता चुका हूँ और तुम विश्वास नहीं करते। वे काम जिन्हें मैं परम पिता के नाम पर कर रहा हूँ, स्वयं मेरी साक्षी हैं।
10:26
किन्तु तुम लोग विश्वास नहीं करते। क्योंकि तुम मेरी भेड़ों में से नहीं हो।
10:27
मेरी भेड़ें मेरी आवाज को जानती हैं, और मैं उन्हें जानता हूँ। वे मेरे पीछे चलती हैं और
10:28
मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ। उनका कभी नाश नहीं होगा। और न कोई उन्हें मुझसे छीन पायेगा।
10:29
मुझे उन्हें सौंपने वाला मेरा परम पिता सबसे महान है। मेरे पिता से उन्हें कोई नहीं छीन सकता।

## Chapter 6: यहुन्ना 17 की निम्न आयतों  पर मनन करें और याद करने का प्रयास करें: 6-10; 20-21

17:6
“जगत से जिन मनुष्यों को तूने मुझे दिया, मैंने उन्हें तेरे नाम का बोध कराया है। वे लोग तेरे थे किन्तु तूने उन्हें मुझे दिया और उन्होंने तेरे वचन का पालन किया।
17:7
अब वे जानते हैं कि हर वह वस्तु जो तूने मुझे दी है, वह तुझ ही से आती है।
17:8
मैंने उन्हें वे ही उपदेश दिये हैं जो तूने मुझे दिये थे और उन्होंने उनको ग्रहण किया। वे निश्चयपूर्वक जानते हैं कि मैं तुझसे ही आया हूँ। और उन्हें विश्वास हो गया है कि तूने मुझे भेजा है।
17:9
मैं उनके लिये प्रार्थना कर रहा हूँ। मैं जगत के लिये प्रार्थना नहीं कर रहा हूँ बल्कि उनके लिए कर रहा हूँ जिन्हें तूने मुझे दिया है, क्योंकि वे तेरे हैं।
17:10
वह सब कुछ जो मेरा है, वह तेरा है और जो तेरा है, वह मेरा है। और मैंने उनके द्वारा महिमा पायी है।
17:20
“किन्तु मैं केवल उन ही के लिये प्रार्थना नहीं कर रहा हूँ बल्कि उनके लिये भी जो इनके उपदेशों द्वारा मुझ में विश्वास करेंगे।
17:21
वे सब एक हों। वैसे ही जैसे हे परम पिता तू मुझ में है और मैं तुझ में। वे भी हममें एक हों। ताकि जगत विश्वास करे कि मुझे तूने भेजा है।